संरचनावादी उपागम

संरचनावादी परिप्रेक्ष्य में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों में उपलब्ध सामग्री। गतिविधियों के आधार पर अपने लिए ज्ञान की रचना करते हैं (अनुभव)। बच्चों के संज्ञान में अध्यापकों की भूमिका को भी रचनावादी परिप्रेक्ष्य में बढ़ाया जा सकता है। यदि वे ज्ञान निर्माण की उस प्रक्रिया में ज्यादा सक्रिय रूप से शामिल हो जाएँ जिसमें बच्चे व्यस्त हैं।

इस दृष्टिकोण से यह अर्थ सामान्य तौर निकलता है कि हर बच्चा अपने ज्ञान का स्वयं निर्माण करता है। हर बच्चा विलक्षण है और इसलिए उसे न सिर्फ व्यक्तिगत ध्यान की जरूरत है। वरन् उसे अपने तरीके से सीखने का मौका मिलना चाहिए इसे प्रदान करना स्कूल व कक्षा की जिम्मेदारी है। रचनावाद की सतही समझ यह अर्थ देती है कि कोई भी बच्चा गलत नहीं समझा जा सकता है। मतलब जो भी बच्चे ने उत्तर दिया, वह उसके दृष्टिकोण से सही है। वैसे रचनावादी पाठ्यचर्या की वकालत कई प्रकार से की जाती है। कुछ लोगों के अनुसार इसके अन्तर्गत स्कूल में पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्य पुस्तक व किसी भी निर्धारित प्रक्रिया अथवा ढाँचे को नकारा जाता है। इसके अनुसार बच्चों की ज्ञान निर्माण की इच्छा, गति और अनुभव के आधार पर बढ़ना ही ठीक माना जाता है। जबकि कुछ दूसरे शिक्षाविदों के अनुसार इस उपागम हेतु पाठ्यक्रम की आवश्यकता नहीं है,

बल्कि शिक्षा की प्रक्रिया की रचना अधिगमकर्ता के पूर्व अनुभवों को केन्द्र में रखकर की जानी चाहिए।

संज्ञानात्मक उपागम

पाठ्यक्रम के इस उपागम का आधार संज्ञानात्मक मनोविज्ञान है जिसमें विकास ने शिक्षा के हर एक पक्ष को प्रभावित किया है। शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम, शिक्षा के संगठन, शिक्षक की भूमिका आदि सभी पक्षों को नया आयाम प्रदान किया है। संज्ञानात्मक प्रवृति के अनुसार शिक्षा के द्वारा बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन आना चाहिए। मानव विकास के विभिन्न पक्षों की खोज एवं उनके अध्ययन में निरन्तर लगा हुआ है। इन सबका पाठ्यक्रम पर प्रभाव पड़ा है। तथा निरन्तर पड़ रहा है। मनोविज्ञान के अध्ययन से यह ज्ञात करने का भी प्रयास किया जाता है कि शिक्षक छात्रों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं तथा उनकी अधिगम तत्परता को ध्यान में रखते हुए अन्तर्वस्तु को किस रूप में व्यवस्थित करते हैं।

संज्ञानात्मक सिद्धान्त —

इस क्षेत्र का सामान्य अभिप्राय उस परिवेश से है जिसमें सभी घटनाएँ घटित होती हैं। क्षेत्र सिद्धान्तों के अन्तर्गत आने वाले प्रमुख सिद्धान्त

① पूर्णाकारवाद सिद्धान्त (Gestalt theory)
② तलरूप सिद्धान्त (Topological theory)
③ प्रतीक-पूर्णाकार सिद्धान्त (Sign-Gastalt theory)

① पूर्णकारवाद सिद्धान्त :-

गेस्टाल्ट का अर्थ समग्र रूप है। पूर्णाकारवाद के अनुसार व्यक्ति किसी क्रिया को आंशिक रूप से नहीं बल्कि पूर्ण रूप से सीखता है। पूर्णाकारवाद के जन्मदाता जर्मनी के मनोवैज्ञानिक मैक्स वर्दीमर हैं। इस सिद्धान्त का मूल यह है कि जब मानवीय आँख एक के बाद दूसरे दृश्य उद्दीपन को देखती है तो उसकी प्रतिक्रिया ऐसी होती है कि उन उद्दीपनों का रूप युगपत बनता है। इसी के आधार पर बाद में कोहलर ने सूझ या अन्तदृष्टि के सिद्धान्त का विकास किया। इसके अनुसार व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण परिस्थिति को अपनी मानसिक शक्ति से अच्छी तरह समझ लेता है और सहसा उसे ठीक करना सीख लेता है वह ऐसा अपनी सूझ के करण करता है।

② तलरूप सिद्धान्त :-

तलरूप सिद्धान्त के जन्मदाता कुर्टलेविन ने जीवन के वातावरण को अधिगम का आधार माना है। उसने इन आधारों में आकांक्षा स्तर, उद्देश्य आकर्षण, स्मृति की गति तथा पुरस्कार एवं दण्ड को अधिक महत्व दिया है।

③ प्रतीक पूर्णाकार सिद्धान्त :- प्रतीक पूर्णाकार सिद्धान्त के प्रतिपादक टालमैन की मान्यता है कि मानव का व्यवहार उद्देश्यपूर्ण होता है। अतः यह अधिगम के चिन्हों एवं आशाओं को अधिक महत्व देता है। इसके अनुसार उद्दीपन में अर्थ समय उत्पन्न होता है जबकि वह व्यक्ति की आवश्यकता और उद्देश्य पूर्ति में सहायक होता है।

प्राचार्य
ीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, ब